# चाचा की कुंवारी साली के साथ चुदाई के हसीन लम्हे

“वैरी सेक्सी गर्ल हॉट स्टोरी में पढ़ें कि कैसे मुझे गाँव में मेरे चाचा की साली मिली. उसने मेरे साथ शरारत की तो मैं भी उसकी चुदाई की ताक में था. मैंने उसे कैसे चोदा ? …”

**Story By: Raj Sharma (rajaharma6659)**
**Posted: Monday, August 31st, 2020**
**Categories: जवान लड़की**
**Online version: चाचा की कुंवारी साली के साथ चुदाई के हसीन लम्हे**


*Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire*

# चाचा की कुंवारी साली के साथ चुदाई के हसीन लम्हे

 यह कहानी सुनें

वैरी सेक्सी गर्ल हॉट स्टोरी में पढ़ें कि कैसे मुझे गाँव में मेरे चाचा की साली मिली. उसने मेरे साथ शरारत की तो मैं भी उसकी चुदाई की ताक में था. मैंने उसे कैसे चोदा ?

मेरी सेक्स कहानी
देसी आंटी के साथ मेरी पहली चुदाई
में मैंने बताया था कि कैसे मेरी सेक्स लाइफ रेणु आंटी के साथ शुरू हुई थी.

मैं आंटी के साथ सेक्स का पूरा एक्सपीरियंस ले चुका था. रेणु आंटी ने बिस्तर पर कलाबाजी करने के खेल में मुझे बहुत कुछ सिखा दिया था. उस सेक्स कहानी को लेकर आप सभी के बहुत सारे मेल भी आए, जिनका मैं दिल से शुक्रिया अदा करता हूँ.

आज बहुत अरसे बाद अपनी एक मित्र के कहने पर आज अपनी वैरी सेक्सी गर्ल हॉट स्टोरी आप सबके साथ शेयर कर रहा हूँ. जिन लोगों ने मेरी पहली सेक्स कहानी नहीं पढ़ी है, उन्हें मैं एक बार फिर से अपना परिचय दे दूं.

मैं राज शर्मा (स्टोरी नाम) कानपुर से हूँ. ये कहानी उस वक़्त की है, जब मैंने जवानी की दहलीज पर कदम रखा था और गाज़ियाबाद में रहता था.

गर्मी की छुट्टियां शुरू हो रही थीं. हर बार की तरह इस बार भी हम कानपुर अपने पैतृक घर गए. जहां जाकर हमें पता चला कि हमारे दादा के छोटे भाई का देहांत हो गया है. जिस

वजह से हमें अपने गांव जाना पड़ा. उधर सभी रिश्तेदार आए थे. नीरजा से मेरी मुलाकात वहीं हुई थी.

नीरजा छोटे दादा के बेटे, मतलब मेरे पापा के कजिन(मेरे चाचा लगे) की साली की बेटी थी. उसका फिगर ठीक था. उसने भी जवानी की दहलीज पर कदम रखा ही था. मैं बगीचे से आम और जामुन तोड़ कर लाता था, जो नीरजा को बहुत पसंद थे.

इससे हमारे बीच जान पहचान बढ़ने लगी. तेरहवीं की रस्म होने के भीड़ कम हो गई. नीरजा वहीं अपनी मौसी के साथ रुक गई.

मैं शुरू से ही हंसमुख स्वभाव का था. इसलिए मेरी उससे काफी घुटने लगी थी.

गांव में जल्दी ही अंधेरा हो जाता है. उस समय गांव में लाइट भी नहीं थी. शाम को मनोरंजन के लिए हम सब इकट्ठे होते व कहानी किस्सों का दौर शुरू हो जाता.

ऐसे ही एक दिन मैं कहानी सुनाने लगा. सभी लोग छत पर दरी बिछा कर बैठे थे. मैं खाट पर बैठ कर कहानी सुना रहा था. नीरजा मेरे बहुत नजदीक बैठी थी. वो इतने पास थी कि मेरे पैर हिलते, तो नीरजा से टकरा जाते.

धीरे धीरे मुझे महसूस हुआ कि मेरे पैर नीरजा के पैरों के बीच में आ गए हैं बिल्कुल उसकी बुर से टच होते हुए.
मुझे ये महसूस करते ही हल्का झटका लगा.

मैंने अपना पैर हटाने की कोशिश की. तो नीरजा मेरे और नजदीक खिसक आई. जिससे मेरे पैर का अंगूठा नीरजा की बुर की दरार में आ गया. अब मेरे पास अपने पैर को हटाने की जगह नहीं बची थी. मेरा अंगूठा स्थिर था मगर नीरजा की कमर हिल रही थी जिससे वो मजा ले रही थी.

अंगूठा बुर में लग रहा था तो उसकी बुर का गीलापन भी मुझे गरमाने लगा था. मगर अभी सिर्फ अंगूठा ही चलाया जा सकता था. इसके आगे हम कुछ नहीं कर सकते थे.
अंधेरे के कारण किसी को कुछ दिखाई तो नहीं दे रहा था, मगर सुनाई सब दे रहा था. इसलिए मैं कुछ बोल भी नहीं पा रहा था.

सुबह नीरजा से आंखें मिलीं, तो पट्ठी अपनी मौसी के साथ थी. मुझे देख कर उसने मुँह फेर लिया और शरीफजादी बन गई. मैं भी लंड दबा कर रह गया.

उधर इसी तरह की पोजीशन बनी रही और हम दोनों में कोई बात न हो सकी. पहले जो आम जामुन के चलते बातचीत हो जाती थी, अब वो भी नीरजा करने में सकुचा रही थी.

एक हफ्ते बाद हम सब वापस कानपुर आ गए.

कानपुर आने के बाद चाचा मुझे अपने घर ले गए. जहां नीरजा भी थी. चाची डिलीवरी के लिए अपने मायके गई थीं. जो पास में ही था.

चाचा के घर खाना बनाने के लिए नीरजा, चाचा के घर में आ गई थी. वहां सिर्फ मैं, चाचा, छोटे चाचा व नीरजा ही थे.

सुबह नौ बजे चाचा मुझे घर पर छोड़ कर आफिस चले गए. छोटे चाचा अपने काम से निकल गए थे. घर में सिर्फ मैं और नीरजा ही थे. नीरजा नहाने के लिए बाथरूम में चली गई, जिसकी एक खिड़की हल्की खुली रहती थी. नीरजा ने अपने कपड़े उतारे और नहाने लगी.

मैंने खिड़की की झिरी से अन्दर देखा, तो अन्दर नीरजा बिल्कुल नंगी नहा रही थी. उसकी नंगी जवानी देख कर मेरे लंड में आग लगने लगी. मैं बस चुपचाप उसकी बुर और चूचियां देखते हुए अपने लंड को हिलाने लगा.

नीरजा जब नहा कर बाहर आने लगी, तो मैं कमरे में वापस आ गया.

चाचा के पास एक ही कमरा था. रात में मैं छोटे चाचा के साथ सोया था. दूसरे पलंग पर बड़े चाचा और नीरजा थे. गर्मी के कारण मैंने अपना पलंग पंखे के नीचे खिसका लिया, जिससे मेरे और नीरजा के बीच दूरी खत्म हो गई.

रह रह कर मुझे नीरजा की गांव की वो हरकत याद आने लगी. मेरी नींद उड़ गई थी. नीरजा मेरे बहुत नजदीक लेटी थी.

चूंकि आग लगाने की शुरुआत नीरजा ने की थी. मगर अब वो बिल्कुल घास नहीं डाल रही थी. मैं सोचा कि शायद ये मेरी तरफ से पहल का इंतजार कर रही होगी. ये सोच कर उस रात मुझसे रहा नहीं गया और मेरा हाथ नीरजा के टॉप के ऊपर उसके मम्मों पर चला गया.

मैंने पहले तो हाथ रखा और रुक गया. उसने कुछ हरकत नहीं की. तो धीरे धीरे मैं नीरजा के मम्मों को दबाने लगा.

कोई दो मिनट तक नीरजा की तरफ से कोई हरकत नहीं होने से मेरी हिम्मत बढ़ गई. मेरा हाथ नीरजा के टॉप के अन्दर घुस गया. नीरजा के निप्पल टाइट हो गए थे.

मैं नीरजा के दोनों मम्मों और निप्पलों को बारी बारी से मसलने लगा. नीरजा ने कोई विरोध नहीं किया, उसने सिर्फ अपना हाथ मेरे हाथ पर रख दिया. लेकिन मेरे हाथ को हटाने की कोशिश नहीं की. ये मेरे लिए ग्रीन सिग्नल था.

मैं नीरजा के मम्मों को छोड़ कर उसकी बुर की तरफ आ गया. पहले पैंटी के ऊपर से बुर को हल्का रगड़ा, तो महसूस हुआ नीरजा की पैंटी गीली हो रही थी. मेरा हाथ बुर को महसूस करने लगा. नीरजा की पैंटी के अन्दर नंगी बुर पर आ गया. मेरे हाथ की उंगलियां

नीरजा की बुर के होंठों को खोल कर अन्दर घुसने लगी, जिससे नीरजा गर्म होने लगी.

वो चाचा के साथ लेटी होने के कारण ज्यादा हिल नहीं सकती थी, न आवाज कर सकती थी. उसने अपना हाथ अपने मुँह पर रख लिया.

मैं तेजी से उसकी बुर में उंगली कर रहा था, जिससे नीरजा की बुर ने पानी छोड़ दिया. मेरा हाथ नीरजा की बुर के पानी से गीला हो गया, जिसे मैंने नीरजा की पैंटी में ही साफ कर दिया.

अगले दिन जब चाचा आफिस चले गए छोटे चाचा भी गांव चले गए थे. उनके जाने के बाद नीरजा फिर से नहाने गई. तो वो टॉवल, कमरे में ही छोड़ कर बाथरूम में घुस गई.

मैं फिर से नीरजा को नंगा नहाते देखने लगा. जब नीरजा नहा चुकी, तो उसने मुझे टॉवल देने को बोला.

जब मैंने पूछा- टॉवल लेकर क्यों नहीं गई थीं ?
तो वो बोली- कपड़े धोने थे तो टॉवल टांगने की जगह नहीं थी.

मैं हाथ बढ़ा कर टॉवल नीरजा को देने लगा, जिसके लिए नीरजा ने हल्का सा दरवाजा खोला. लेकिन नीरजा के नंगे जिस्म की हल्की झलक मुझे मिल ही गई.

नीरजा बदन को पौंछ कर बाहर आई और अपने बालों को झटका, तो पानी की बूंदें मेरे चेहरे पर टकरा गईं.

थोड़ी देर पहले ही मैंने नीरजा की नंगी नहाते देखा था. मैंने नीरजा को पकड़ लिया.

और रात के बारे में कुछ बोलता, इससे पहले ही नीरजा बोल उठी- राज मुझे छोड़ो, खाना बनाना है मुझे.

वो मेरा हाथ झटक कर किचन में घुस गई.

मैं भी झिझक के मारे उससे कुछ ज्यादा न कह सका. अब तक दोपहर के 12 बज गए थे. चाचा के लंच के लिए आने का टाइम हो रहा था. इसलिए मैंने भी कुछ नहीं किया.

आज चाचा भी दस मिनट पहले ही आ गए थे. मैं उनके सामने खटिया पर लेटा हुआ एक किताब पढ़ रहा था.

चाचा ने मुझसे कुछ नहीं कहा. वो लंच करके फिर से चले गए.

अब मेरे पास पूरा टाइम था.

नीरजा और मैं लंच करके बेड पर आराम करने लगे. नीरजा मेरे साथ बेड पर लेटी थी. उसके हाथ में मैगज़ीन थी. मेरा ध्यान सिर्फ नीरजा के जिस्म पर था. आग दोनों तरफ लगी थी, लेकिन शुरू मुझे ही करना था.

मैंने अपना हाथ नीरजा के मम्मों पर रखा और नीरजा को अपनी तरफ चिपका लिया.

नीरजा- ये क्या कर रहे हो राज ?
मैं- तुम्हें प्यार कर रहा हूँ.

नीरजा- पागल हो क्या ?
मैं- पागल तो तुमने गांव में ही कर दिया था, जब मेरा पैर तुमने अपने पैरों के बीच में दबा लिया था. वक़्त और मौका नहीं मिला था … और न ही तुमने मुझे कुछ करने दिया था.
नीरजा इठला कर बोली- अच्छा … मौका मिलता तो क्या करते ?
मैं- कल रात में जो किया था, क्या भूल गई उसे ?

नीरजा- रात को तुमने ठीक नहीं किया. मौसाजी जाग जाते तो !

मैं- मुझे पता था तुम ऐसा कुछ नहीं करोगी कि चाचा जग जाएं और तुमने वही किया. वैसे रात में पानी बहुत निकाला था.
नीरजा- तुमने इतना गरम कर दिया था, तो पानी तो निकलता ही. फिर तुम उंगली इतनी जल्दी जल्दी कर रहे थे, तो मुझसे रहा ही न गया.

मैं- रात में दिखा नहीं था, कैसे पानी निकला!
नीरजा- तो अब क्या करने का इरादा है?
मैं- जो रात में नहीं हुआ था … वो!
नीरजा- रात में क्या नहीं हुआ … तुमने बुर में उंगली घुसा दी, मेरा पानी निकाल दिया और क्या चाहिए तुम्हें?

उसके मुँह से बुर शब्द सुनते ही मैंने नीरजा का गाउन ऊपर कर दिया. उसके ब्रा के साथ ही उसके गाउन को निकाल दिया … और नीरजा के मम्मों पर टूट पड़ा.

नीरजा भी मस्ता गई. मैं उसके मम्मों मसलने और चूसने लगा.

नीरजा- आह राज … दर्द हो रहा है इतनी जोर से कर रहे हो!
मैं- दर्द तो रात में भी हो रहा था, तब कुछ नहीं बोलीं. अभी तो दर्द की शुरुआत है जान.
नीरजा- ऐसी शुरुआत है … तो अंत कैसा होगा. प्लीज धीरे करो … आंह निप्पल इतनी तेज मत खींचो यार … लगती है. रात में भी तुमने तेज मसल दिए थे, बहुत दर्द हो रहा था.
मैं- दर्द के साथ मजा भी तो ले रही थीं.
वो हंस दी.

मैं नीरजा के मम्मों और निप्पलों को बेदर्दी से चूस रहा था. मेरा एक हाथ नीरजा की पैंटी के अन्दर घुस गया और नीरज की बुर की फांकों को खोल कर उंगली नीरजा की गीली हो चुकी बुर की गहराई नापने लगी.

नीरजा ने अपनी टांगें खोल दीं- उफ्फ राज … तुमने मेरी बुर में आग लगा दी … आंह … बहुत अच्छा लग रहा है. ऐसे ही करते रहो.
मैं- आज तो तेरी बुर का पानी निचोड़ लूंगा.
नीरजा- सिर्फ उंगली से ही करते हो या कुछ और भी करते हो.
मैं- पहले उंगली से तेरी बुर की गहराई तो देख लूं.

नीरजा का हाथ मेरी लुंगी के अन्दर छिपे लंड पर चला गया. उसने मेरी लुंगी हटा दी और नीरजा मेरे लंड को मसलने लगी.

नीरजा- तेरा लंड तो बहुत गर्म है. बहुत मस्त है … जल्दी से इसे मेरी बुर के अन्दर डाल दे … मेरी बुर लंड की बहुत प्यासी है.
मैं- पहले तूने लंड लिया है क्या ?
नीरजा- हां क्लास के एक लड़के ने ऊपर से रगड़ा था … मगर वो अन्दर नहीं घुसा पाया था. कहीं तू भी उसकी तरह ऊपर से रगड़ कर पानी तो नहीं छोड़ देगा ?

इतना सुनते ही मैंने नीरजा की पैंटी को उतार कर उसको पूरी नंगी कर दिया और उसकी मस्त गुलाबी फूली हुई बुर को देखने लगा.

नीरजा- ऐसे क्या देख रहा है … कभी नंगी लड़की नहीं देखी क्या ?
मैं- देखी तो है, लेकिन इतने नजदीक से नहीं देखी और अपने साथ बिस्तर पर नंगी कभी नहीं देखी.
नीरजा- वैसे किसको देखा है ?

मैं- तुझे दो दिन से खिड़की से झांक कर नहाते हुए नंगी देख रहा हूँ. पर अब तुझे नजदीक से देख रहा हूँ.
नीरजा- हम्म … बाद में देख लेना अच्छे से … अभी तो जल्दी से चोद दे. मेरी बुर में आग

लगी है … रात से तूने आग लगा दी है. आज अगर तू कुछ नहीं करता, तो मैं ही तुझे पकड़ कर चोद देती.
मैं- इतनी आग लगी है तेरी बुर में ! देखूँ तो सही कितनी गरम है.

इतना बोल कर मैं उस वैरी सेक्सी गर्ल के पैरों के बीच में आ गया और नीरजा की बुर खोल कर अपना लंड नीरजा की बुर के गुलाबी होंठ पर रगड़ने लगा.
बुर पर लंड की रगड़ नीरजा से बर्दाश्त नहीं हुई. नीरजा की बुर गीली हो गई थी. वो गांड उठाते हुए लंड अन्दर लेने की कोशिश करने लगी.

नीरजा- प्लीज राज तड़पा मत यार … अन्दर डाल कर चोद दे मुझे.
मैं- हां … यही तो तेरे मुँह से सुनना था मुझे.

मैंने नीरजा की गीली हो चुकी बुर में धक्का दे मारा. नीरजा पहले ही अपनी बुर में लंड लेने के लिए गांड उठाए थी. मेरे तगड़े धक्के से लंड का सुपारा नीरजा की बुर में घुस गया.

मेरे मोटे लंड के लिए नीरजा की बुर बहुत टाइट थी. अभी तक उसकी बुर में सिर्फ उंगली या पेन पेन्सिल ही घुसी थी. वो दर्द से दोहरी हो गई और उसने अपने दांत दबा कर लंड के दर्द को सहन करने की कोशिश की.

मैंने एक और तेज धक्का मारा. मेरा आधा लंड नीरजा की बुर खोलता हुआ अन्दर घुस गया.

नीरजा तड़फ उठी- राज बहुत तेज दर्द हो रहा है … रुक जा अभी.
मैं- लंड बाहर निकाल लूं क्या ?
नीरजा- नहीं बाहर मत निकलना, वरना फिर से अन्दर डालेगा … तो फिर दर्द होगा. थोड़ी देर यूं ही रुक जा बस. पहले तूने किसी को नहीं चोदा क्या ?

मैं नीरजा के निप्पलों को मसलने और चूसने लगा.

मैं- चोदा है, लेकिन वो आंटी थी. दो बच्चों की माँ थी. उसकी चूत तो पहले ही इतनी खुली थी कि लंड को कसावट का मालूम ही नहीं चला था. तेरी बुर तो बहुत टाइट है.
नीरजा- हां अब तक इसमें कोई लंड नहीं गया न … चल अब पूरा अन्दर कर दे.

इतना सुनते ही मैंने एक और धक्का मार कर पूरा लंड नीरजा की बुर में जड़ तक घुसेड़ दिया.

नीरजा की चीख निकलती, लेकिन नीरजा ने अपने हाथ से अपना मुँह बंद कर दिया. नीरजा की आंखों में आंसू आ गए. मेरा लंड सीधा बच्चेदानी से टकराया.

नीरजा- उई … माँ मर गई … राज तेरा लंड बहुत मोटा है … थोड़ी देर यहीं रोक के रख!
मैं- मेरा लंड तो ऐसा ही है … तेरी बुर बहुत टाइट है. अभी तक लंड नहीं लिया न तूने.
नीरजा- हां लेकिन उंगली तो बराबर करती थी. इसलिए दर्द कम हुआ. झिल्ली भी टूट गई है … वरना ब्लड भी आ जाता.

मैंने कुछ पल रुक कर उसे दूध चूसे और पूछा- हां अब बोल … आगे चलूँ?
नीरजा- हां अब कुछ दर्द कम है … धीरे धीरे चोदो.

मैंने अपना लंड धीरे धीरे नीरजा की बुर में अन्दर बाहर करना शुरू कर दिया. लंड की रगड़ से नीरजा की बुर एक बार फिर से पिघल गई. मेरा लंड नीरजा की बुर के रस से नहा गया.

नीरजा- आह … बहुत अच्छा लग रहा है राज … आज तुम्हारा लंड लेकर मजा आ गया. मुझे तो लगा था कहीं तुम भी राकेश की तरह बुर पर लंड रखते ही झड़ गए, तो मेरी बुर का क्या होगा.
मैं- ये लंड तो 28 साल की रेणु की बुर की गर्मी पी चुका है. तेरी बुर में उससे बहुत ज्यादा

गर्मी है. वैसे तेरी बुर में घुस कर मेरे लंड को मजा आ गया. तेरी बुर की रगड़ मेरे लंड को गरम कर रही है. मैं अभी और अन्दर बाहर करूंगा.
नीरजा- हां तो रोका किसने है … ऐसे ही चोदते रहो. तुम्हारे लंड की रगड़ मुझे भी अच्छी लग रही है.

मैं फिर से इकसठ-बासठ करने लगा. जैसे जैसे नीरजा की बुर में लंड की जगह बन रही थी, मेरा लंड स्पीड बढ़ा रहा था. अब मैं अपने लंड को पूरा बुर से बाहर निकाल कर तेज धक्के के साथ लंड अन्दर घुसाने लगा था.

नीरजा भी गांड उठा कर मेरे धक्कों का जवाब देने लगी थी.

उसका अब तक तीन बार बुर का जूस निकाल चुकी थी. लंड भी अब तक पूरी जगह बना चुका था. मैं और नीरजा दोनों ही पसीने से भीग चुके थे. मेरे धक्के गहरे और तेज होने लगे थे.

नीरजा भी गांड उठा कर धक्के के साथ ताल मिला रही थी. मेरी जांघें नीरजा की गांड से टकरा के तबले की आवाज निकाल रही थीं. लंड के साइड से बह कर नीरजा की बुर का पानी गांड के छेद से होता हुआ नीचे रखी नीरजा की पैंटी को गीला कर रहा था.

नीरजा- ओह्ह यस राज … जोर जोर से चोदो … आंह बहुत मजा आ रहा है … आह मेरी बुर की प्यास आज तुमने बुझा दी है.
मैं- मेरा पानी निकलने वाला है.
नीरजा- अन्दर मत निकालना … मेरे फेस पर निकालो.

मेरा लंड नीरजा की बुर में फूलने लगा मेरे लंड की नसें तन रही थीं. लंड में रक्त संचार बढ़ने लगा था. लंड की रगड़ से नीरजा की बुर भी सिकुड़ने लगी थी. ऐसा लगने लगा था,

जैसे बुर लंड को निचोड़ लेगी.

मेरे धक्के तेज और गहरे होने लगे. नीरजा ने पूरी गांड ऊपर उठा दी और बहुत तेज झड़ने लगी. मेरे गोटे भी तैयार थे. मैंने अपना लंड जैसे ही नीरजा की बुर से बाहर निकाला, लंड ने फव्वारा छोड़ दिया, जो नीरजा की बुर से फेस तक लाइन बनाता चला गया.

नीरजा ने मेरे लंड का पानी अपने जिस्म पर क्रीम की तरह मल लिया. हम दोनों थक के एक दूसरे से चिपक के नंगे ही लेट गए.

शाम 4 बजे तक हम दोनों ने 2 राउंड चुदाई की. फिर दोनों नहा कर ऐसे रेडी हो गए, जैसे कुछ हुआ ही नहीं हो.

मैं वहां दो हफ्ते रुका और रोज नीरजा की चुदाई करता. नीरजा चुदाई के बाद मेरे लंड के जूस को अपने जिस्म पर मल लेती, जिससे उसके जिस्म पर एक चमक आने लगी थी.

मैं उसके बाद कभी नीरजा से नहीं मिल सका.

पाठकों आपको मेरी वैरी सेक्सी गर्ल हॉट स्टोरी कैसी लगी, मुझे मेल या हैंगआउट करें.
anil.6659sharma@gmail.com

# Other stories you may be interested in

## दो जवान बेटियों की मम्मी की अन्तर्वासना- 5

सेक्सी हिंदी में कहानिया में पढ़ें कि मेरे पड़ोस की भाभी ने अपनी वासना पूर्ति के लिए मुझे अपने घर में ही पेइंग गेस्ट रख लिया. उनकी बेटियाँ भी खुश हो गयी. कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि […]
Full Story >>>

## जेठ जी ने मेरा काण्ड कर दिया- 2

देसी Xxx सेक्स कहानी में पढ़ें कि जेठ जी से चुदकर उनके लम्बे मोटे लंड से दुबारा चुदने का मन था मेरा. लेकिन मुझे लाज लग रही थी कि उनसे कैसे कहूँ कि मुझे चोदो. हैलो फ्रेंड्स, मेरी देसी Xxx […]
Full Story >>>

## जेठ जी ने मेरा काण्ड कर दिया- 1

जेठ बहू सेक्स कहानी में पढ़ें कि मेरे पति अममून दौरे पर रहते हैं. मैं चुदाई को तरसती हूँ. एक रात मैं मूतने गयी तो अधनंगी बाहर आ गयी. जेठ जी ने मुझे देखा तो … लेखक की पिछली कहानी : […]
Full Story >>>

## दो जवान बेटियों की मम्मी की अन्तर्वासना- 3

फ्री सेक्स गर्ल्स स्टोरी में पढ़ें कि मैंने अपने पड़ोसी परिवार की मदद की तो उनकी लड़की मुझे पसंद करने लगी. उसने खुल कर अपनी चुदाई कि इच्छा जाहिर कर दी थी. एसएचओ को गुस्सा आ गया और उसने उठकर […]
Full Story >>>

## गांड मरवाने की तलब- 2

चुद चुदाई देसी ग्रुप स्टोरी में पढ़ें कि मैं गांडू लड़का खुद को लड़की मानता हूँ. मेरी बहन और मेरी मम्मी की चूत को अपनी गांड के साथ मैंने अपने यारों से कैसे चुदवाया. मैं गांडू लड़का हूँ पर खुद […]
Full Story >>>